سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ

सूरह कौसर मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ط ①

(हे नबी ﷺ!) निसंदेह (हमने) आपको "कौसर" (अपार भलाई) प्रदान की।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ط ②

तो (अपने) पालनहार (रब) के लिए नमाज़ पढ़ो और बलिदान (कुर्बानी) करो।

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ع ③

निसंदेह तुम्हारा शत्रु ही जड़-कटा (निर्वंश / बे नाम) रहेगा।